पूर्वोत्तर भारत में हिंदी की विकास यात्रा

अनंत मिश्र

भारत बेजोड़ संस्कृति वाला राष्ट्र है और यह विश्व की प्राचीनतम और महानतम सभ्यताओं में से एक है। भारत को मुख्यतः छः अंचलों- उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी, पश्चिमी, मध्यवर्ती और पूर्वोत्तर में वर्गीकृत किया जा सकता है।

'पूर्वोत्तर' शब्द की अवधारणा का उद्भव ब्रिटिश काल के दौरान हुआ। ब्रिटिश काल के दौरान भारत की राजधानी कोलकाता थी और कोलकाता से यह भू- भाग उत्तर- पूर्व में स्थिति है। परन्तु वर्तमान समय में भारत की राजधानी दिल्ली से यह क्षेत्र ठीक पूर्व की ओर है।

भारत का पूर्वोत्तर अंचल वर्तमान समय में आठ राज्यों का एक समूह है, जिसके अंतर्गत असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैण्ड, त्रिपुरा एवं सिक्किम आते हैं। इन राज्यों को सात बहनें और एक भाई (सिक्किम) के नाम से जाना जाता है। भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र भारत की मुख्य सांस्कृतिक धारा के साथ प्रवाहमय है। यह क्षेत्र वैविध्य के दृष्टिकोण से एक अतुल्य क्षेत्र है। यह क्षेत्र अनूठी संस्कृति, हस्तशिल्प और प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है।

पूर्वोत्तर भारत में असमिया के साथ ही बांग्ला, नेपाली. मणिपुरी, अंग्रेजी, खासी, गारो, निशी, आदि, मोनपा, वांग्चु, नागामीज, मिजो, कॉकबरॉक, लेप्चा, भुटिया आदि लगभग 125 भाषाएँ बोली जाती हैं। जिन्हें भाषा विज्ञान की दृष्टि से देखें तो तीन वर्ग में बाँटा जा सकता है ऑस्ट्रो- एशियेटिक, इंडो-आर्यन, तथा तिब्बत-बर्मी। इसके अतिरिक्त 'पूर्वोत्तर' में एक बड़ी जनसंख्या उन हिंदी भाषियों की है जो मुख्यतः उत्तर भारत से आकर यहाँ बस गए हैं। पूर्वोत्तर की भाषाओं में से केवल असमिया, बोड़ो और मणिपुरी को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान मिला है।

भाषाई अस्मिता न केवल संवाद, साहित्य और सृजन जैसे विषयों पर चलती है अपितु जीवन के राग- रंग को कैसे अभिव्यक्त किया जाय इस मुद्दे पर भी चलती है। जब हिंदी पर बातचीत करें, तो अन्य भारतीय भाषाओं के साथ उसको प्रतिपक्ष में खड़ा करने की कोशिश न करें। हिंदी पर जब भी बातचीत करें तो इस रूप में बातचीत करें कि देश के राग को, देश के रंग को, देश के मन को एक ऐसी भाषा में बोलने की बात है जो कच्छ से कटक तक और कश्मीर से कन्याकुमारी तक का व्यक्ति समझ सके।

पूर्वोत्तर में आदिकालीन हिंदी

पूर्वोत्तर भारत में हिंदी लेखन के इतिहास को अगर पलट कर देखें तो हम पाते हैं कि हिंदी साहित्य के आदिकाल से ही पूर्वोत्तर में हिंदी लेखन प्रारंभ हो गया था। कामरूप पीठ कामाख्या में प्राचीन काल से ही तंत्रयान, वज्रयान और सहजयान साधकों का केंद्र स्थल रहा है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने 'हिंदी

साहित्य का इतिहास' ग्रंथ में इस बात का उल्लेख किया है कि 'अपभ्रंश या प्राकृताभास हिंदी के पद्मों का सबसे पुराना पता तांत्रिक और योगमार्गी बौद्धों की साम्प्रदायिक रचनाओं के भीतर विक्रम की सातवीं शताब्दी के अंतिम चरण में लगता है।'

सरहपा (विक्रम संवत् 690) आचार्य शुक्ल के मतानुसार सिद्धों में 'सरहपा' सबसे पुराने हैं एवं उनकी रचनाओं में प्राकृतभास हिंदी के रूप मिलता है। शुक्ल जी ने अपने इतिहास में 'सरहपा' को असम का सिद्ध माना है। अन्य विद्वानों ने भी सरहपा के साथ-साथ अन्य सिद्धाचार्यों को असम का निवासी प्रमाणित किया है। अतः असम (असम से तात्पर्य वर्तमान के आठों राज्यों से है, क्योंकि स्वाधीनता प्राप्ति के बाद धार्मिक एवं राजनीतिक कारणों से छोटे- छोटे राज्य बने हैं। पहले इस पूरे क्षेत्र को 'प्राज्ञज्योतिषपुर' के नाम से जाना जाता था) में हिंदी साहित्य लेखन 'सरहपा' (7वीं सदी) से शुरू माना जाता है।

लुइपा (8वीं सदी) कुछ विद्वान इन्हें बंगाली मानते हैं परन्तु अधिकांश विद्वानों का मत है कि ये कामरूप के निवासी थे। इनकी रचनाओं में संस्कृत एवं अपभ्रंश का सरलीकृत ग्रामीण अपभ्रंश एवं पुरानी हिंदी के रूप मिलते हैं।

यथा-

"काआ तरुवर पंच विडाल।

चंचल चीए पाइठो काल।।"

यहाँ 'पइठना' शब्द ठेठ पूर्वी हिंदी का है।

इनके अतिरिक्त भी 'दारिकप', 'कारुपा', 'कुक्कुरीपा' आदि सिद्धाचार्यों की रचनाओं में हिंदी देखने को मिलती है। ये सभी किसी न किसी रूप में पूर्वोत्तर क्षेत्र से ही सम्बन्ध रखते थे।

पूर्वोत्तर में मध्यकालीन हिंदी

यह एक ऐसा समय था जब सम्पूर्ण भारतवर्ष में उथल- पुथल मची थी। जिस समय भक्ति आंदोलन का उदय हुआ था उस समय हमारा समाज परिवर्तन के लिए व्याकुल था। भारतवर्ष तमाम तरह की रूढ़ियों, बन्धनों से मुक्त होना चाह रहा था। इस तरह की विषम परिस्थिति में भारत में हमेशा से महापुरुषों का प्रादुर्भाव होता रहा है। इस काल में भी अनेक साधु संत, मुनि महात्मा, समाज सुधारकों का जन्म भारत भूमि पर हुआ। डॉ. रामविलास शर्मा लिखते हैं- "कैसा महान युग था वह! दक्षिण में पुरंदरदास, उत्तर में सूरदास, तुलसीदास, पश्चिम में नरसी मेहता और पूर्व में शंकरदेव। ये लोग खूब यात्रा करते थे। पुरंदरदास ने तीन बार उत्तर भारत की यात्रा की, शंकरदेव बारह वर्ष भारत के विभिन्न प्रदेशों में घूमते रहे। इस तरह उन्होंने अपने प्रदेश की जातीय संस्कृति के साथ-साथ पूरे देश की राष्ट्रीय संस्कृति को अपने अनुभव से

समृद्ध किया। इस देश में एक सांस्कृतिक सातंत्यता का भाव रहा है और वह भाव अपने ढंग से यहाँ की रचनाओं में भक्ति आंदोलन में रहा है और इस भाव का प्रतिनिधि हिंदी करती है।

सम्पूर्ण भारतवर्ष की भाँति मध्यकाल में असम में भी राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक असंतुलन व्याप्त था। पूर्वी असम के शासक आहोम राज परिवार में गृह कलह, हुसैन शाह के द्वारा पश्चिम असम के शासक महाराज नीलाम्बर के साथ विश्वासघात आदि राजनीतिक उथल पुथल का दौर पूर्वोत्तर में चलता रहा।

धार्मिक दृष्टिकोण से देखें तो इस समय असम में तंत्र- मंत्र का प्रभाव लोकजीवन में इतना व्यापक रहा कि असम के कामाख्या एवं ताम्रेश्वरी मन्दिर में नरबलि की प्रथा रही। आचार्य शुक्ल लिखते हैं- "शक्तियों सहित देवताओं के युगनबद्ध स्वरूप की भावना चली और उनकी नग्न मूर्तियाँ, सहवास की अनेक अश्लील मुद्राएँ बनने लगी, जो कहीं- कहीं आज भी देखने को मिलती हैं। ... जिस समय मुसलमान भारत में आए उस समय देश के पूर्वी भागों में धर्म के नाम पर दुराचार फैल गया।" ऐसी ही विषम परिस्थितियों में अक्टूबर सन् 1449ई. में श्रीमंत 'शंकरदेव' का प्रादुर्भाव हुआ।

श्रीमंत शंकरदेव (1449ई.-1568 ई.) इनका जन्म नगाँव जिले के बरदोवा ग्राम में हुआ था। इन्होंने बहुदेव पूजा, तंत्र मंत्र, बलि प्रथा आदि कुरीतियों का खंडन करते हुए 'एक देव एक सेव' का उपदेश दिया। इन्होंने संस्कृत. असमिया एवं ब्रजबुलि आदि भाषाओं में काव्य रचना की है। ब्रजबुलि हिंदी की उपभाषा मानी जाती है। 'वरगीत' और 'नाट्य' रचना इन्होंने इसी ब्रजबुलि अथवा ब्रजावली में की। श्रीमंत शंकरदेव द्वारा उद्भावित 'ब्रजावली' भाषा असमिया, बांग्ला, मैथिली, मगही, भोजपुरी का सम्मिश्रण है।

शंकरदेव द्वारा रचित 'वरगीत' के प्रत्येक पद भक्ति से ओत प्रोत हैं। इन गीतों में राम कृष्ण की उपासना पर महत्त्व दिया गया है। इन गीतों में धर्म, साहित्य, सभ्यता, संस्कृति एवं दर्शन का एक साथ समावेश है, जो कहीं न कहीं भारत की सांस्कृतिक एकता को और मजबूती प्रदान करता है।

इन गीतों के अलावा शंकरदेव ने नाटकों की रचना भी 'ब्रजावली' में की। शंकरदेव को आधुनिक नाट्यशास्त्र का जनक कहा जा सकता है। क्योंकि इनसे पहले असमिया अथवा किसी भी आधुनिक भारतीय भाषा में नाट्य साहित्य का विकास नहीं हुआ था।

इस प्रकार श्रीमंत शंकरदेव ने भारत की सांस्कृतिक यात्रा में अपने प्रदेश को जोड़ा।

महापुरुष माधवदेव (1489ई. 1596ई.) इनका जन्म असम के लखीमपुर जिले के लेटेपुखुरी नामक ग्राम में हुआ। जिस प्रकार शंकरदेव ने भारतवर्ष के बड़े भू- भाग का भ्रमण करके देश की एकता अखण्डता में अपना योगदान दिया ठीक उसी प्रकार आगे उनके सुयोग्य शिष्य माधवदेव ने इस कार्य को आगे बढ़ाया। इस कार्य के लिए माधवदेव ने भी 'ब्रजावली' भाषा का सहारा लिया। उन्होंने ब्रजावली भाषा में 'वरगीत' और 'नाटकों' की रचना की। इन रचनाओं का मुख्य उद्देश्य वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार और अपने गुरु श्रीमंत शंकरदेव के एक भारत के लक्ष्य को पूरा करना था।

गोपालदेव आता (1541ई-1611ई) महापुरुष माधवदेव से इनकी भेंट भवानीपुर में हुई। माधवदेव द्वारा दिए गए भक्ति व्याख्यान को सुनकर इनका हृदय भाव विभोर हो उठा और वे माधवदेव के शिष्य हो गए। इन्होंने महापुरुषिया मत की एक नई शाखा स्थापित की और अपने गुरु के आदर्शों को आगे बढ़ाया। इन्होंने विभिन्न पौराणिक नाटकों की रचना की। नाटकों के अतिरिक्त अनेक गीत एवं पदों की रचना की।

मध्यकाल में पूर्वोत्तर भारत में इन विद्वानों के अतिरिक्त भी अनके ऐसे विद्वान हुए जिनकी रचना साहित्यिक दृष्टि से बहुमूल्य है। इन सभी विद्वानों की साहित्यिक रचना में हिंदी पूर्वोत्तर के राज्यों में स्थापित हुई। रामचरण ठाकुर, भूषण द्विज, देत्यारि ठाकुर, श्रीराम आता, रामानद द्विज, विश्वभर द्विज, आदि ऐसे विद्वान हुए जिनकी रचनाओं के माध्यम से हिंदी का प्रचार-प्रसार पूर्वोत्तर के राज्यों में हुआ।

पूर्वोत्तर में आधुनिक कालीन हिंदी

पूर्वोत्तर में हिंदी का औपचारिक रूप से प्रवेश वर्ष 1934ई. में हुआ, जब अप्रैल माह में महात्मा गांधी 'अखिल भारतीय हरिजन सभा' की स्थापना हेतु असम आए। सत्राधिकार एवं स्वतंत्रता सेनानी श्री पीताम्बर देव गोस्वामी के आग्रह पर गांधी जी ने 'बाबा राघव दास जी' को हिंदी प्रचारक के रूप में असम भेजा। 3 नवम्बर 1938ई. में 'असम हिंदी प्रचार समिति' की स्थापना गुवाहाटी में हुई। आगे चल कर इसे 'असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' नाम दिया गया। असम के स्कूलों में हिंदी प्रारम्भ करने के उद्देश्य से जोरहाट, गोलाघाट, शिवसागर, डिब्रूगढ़ आदि जगहों पर हिंदी स्कूलों की स्थापना की गई। यद्यपि इन स्कूलों में हिंदी की पढ़ाई होती थी. परंतु परीक्षाएँ इलाहाबाद या वर्धा में जाकर ही देनी पड़ती थी। 1948ई. से असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के अधीन न रहकर स्वतंत्र रूप से अपनी परीक्षाओं को आयोजित करने लगी। 1970ई. में उत्तर गुवाहाटी में एक हिंदी महाविद्यालय खोला गया। इसके ठीक अगले वर्ष यानी 1971ई. में गुवाहाटी विश्वविद्यालय में हिंदी स्नातकोत्तर स्तर पर पढ़ाई प्रारम्भ कर दी गई। इस प्रकार हम देखते हैं कि वर्तमान समय तक अकेले असम में लगभग 3500 से ज्यादा माध्यमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण के लिए विद्यालय स्थापित हो चुके हैं।

हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए यहाँ पूर्वोत्तर के पत्र- पत्रिकाओं का भी काफी योगदान रहा है। 'प्रकाश', 'नव जागृति', 'छात्र', 'दीप' 'असम प्रदीप' 'प्रभात' 'साहित्य सारथि' आदि पत्रिकाओं का प्रकाशन अबाध गति से प्रवाहमान है।

इस युग के प्रमुख साहित्यकार हैं- 'कमल नारायण देव', 'रजनीकांत चक्रवर्ती', 'महेश्वर महंत', 'बापचन्द्र महंत', 'डॉ. हीरालाल तिवारी', 'अशोक वर्मा' सुरेन्द्र सिंह', 'शुभदा पाण्डे', 'डॉ. शांति थापा', आदि। इस प्रकार हम देखते हैं कि पूर्वोत्तर में हिंदी का प्रचार-प्रसार काफी तीव्र गति से हुआ है।

मणिपुर में हिंदी- यह राज्य भारत की पूर्वी सीमा पर अवस्थित है एवं पड़ोसी देश म्यांमार से सीमा साझा करता है। जिस कारण सुरक्षा की दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। भारत की एकता और अखंडता को

मज़बूती प्रदान करने के लिए भाषा के स्तर पर एक होना भी मायने रखता है। इस उद्देश्य से 1953ई. में 'मणिपुर हिंदी परिषद्' की स्थापना इम्फाल में हुई, जो अपने स्तर पर मणिपुर में हिंदी प्रचार-प्रसार के लिए प्रतिबद्ध है।

नागालैण्ड में हिंदी वर्ष 1951-52 में असम राष्ट्र भाषा प्रचार समिति द्वारा नागालैण्ड में हिंदी का प्रचार-प्रसार आरम्भ हुआ। हिंदी के साधक एवं महात्मा गांधी के परम भक्त श्री पी.टी. जामीर दीमापुर के निवासी थे। इन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन नागालैण्ड में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित कर दिया। नागालैण्ड राज्य के विश्वविद्यालयों में पाँचवीं कक्षा से आठवीं कक्षा तक हिंदी तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। सन् 1980 से नागालैण्ड की हिंदी पाठ्यपुस्तकों में गुणात्मक सुधार किया गया। ये पुस्तकें पाँचवीं से आठवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों को पढ़ाई जाती हैं।

मेघालय में हिंदी 20 जनवरी, 1972ई. को मेघालय, असम से अलग होकर एक पूर्ण राज्य बना। वर्ष 1976ई. में हिंदी संस्थान के शिलॉन्ग केन्द्र की स्थापना हुई। ईसाई मिशनरियों के माध्यम से यहाँ अंग्रेजी का वर्चस्व रहा है। तथापि केंद्रीय हिंदी संस्थान शिलॉन्ग के महत्त्वपूर्ण योगदान से हिंदी की स्थिति बनी हुई है। रेडियो स्टेशन शिलॉन्ग से हिंदी गाने प्रसारित किए जाते हैं जिसके माध्यम से हिंदी में अच्छी खासी रुचि पैदा होती है।

त्रिपुरा में हिंदी-वर्ष 1972ई. के पहले त्रिपुरा असम का ही एक अंग था। जिस कारण यहाँ हिंदी का प्रचार-प्रसार असम के साथ ही होने लगा। त्रिपुरा विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग है। जिससे पता चलता है कि वहाँ के लोग हिंदी पठन पाठन के प्रति सचेत हैं।

अरुणाचल प्रदेश में हिंदी यह भारत के पूर्वी सीमांत पर अवस्थित है, जिस कारण इसे 'सूर्योदय की भूमि' कहा जाता है। अरुणाचल प्रदेश एक ऐसा राज्य है, जिसकी सीमाएँ तिब्बत, म्यानमार देशों के साथ प्राय: 1300 कि.मी. व्याप्त हैं। इस दृष्टि से इस क्षेत्र का काफी महत्त्व है। सरकारी कामकाज अंग्रेजी में चलता है परंतु नई पीढ़ी के लोगों में हिंदी ही ज्यादा प्रचलित है। खुशी की बात यह है कि अरुणाचल प्रदेश में लोगों के बीच सम्पर्क भाषा हिंदी है। इस राज्य में हिंदी को लेकर किसी भी प्रकार की विरोध भावना नहीं है।

मिजोरम में हिंदी- प्रारम्भ में यहाँ हिंदी का प्रचार-प्रसार असम के साथ ही हुआ क्योंकि मिजोरम असम का ही एक छोटा जिला था। परंतु असम से अलग होने के बाद यहाँ हिंदी प्रसार के लिए अनेक संस्थाएँ कार्यरत हैं।

सन् 1975ई. में केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के सहयोग से 'मिजोरम हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, आइजोल' की स्थापना हुई। जहाँ हिंदी विकास के लिए अनेक कार्यक्रम प्रारम्भ किए गए। जैसे दो वर्षीय हिंदी शिक्षण डिप्लोमा आदि।

इसके अतिरिक्त 'मिजोरम हिंदी टीचर्स एसोसिएशन', 'मिजोरम हिंदी प्रचार समिति, आइजोल', आदि संस्थान कार्यरत हैं।

सिक्किम में हिंदी भारत के उत्तरी सीमा पर अवस्थित यह प्रदेश अपनी प्राकृतिक सुषमा से परिपूर्ण होने के कारण पर्यटन के लिए विशेष महत्त्व रखता है। सिक्किम में हिंदी विद्यालयों के माध्यम से, सिनेमा, दूरदर्शन आदि हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

चुनौतियाँ और संभावनाएँ

इन सब के अतिरिक्त पूर्वोत्तर के राज्यों में हिंदी भाषा को ले कर काफी चुनौतियाँ भी हैं। अहिंदी भाषी क्षेत्र होने के कारण ग्रहण योग्यता को लेकर समस्या आती हैं। शुद्ध हिंदी बोलने के दबाव की वजह से गैर हिंदी भाषी सार्वजनिक मंच पर हिंदी बोलने में कतराते हैं। पूर्वोत्तर के सबसे महत्त्वपूर्ण राज्य असम में हिंदी को लेकर कोई बड़ी समस्या नहीं दिखाई पड़ती क्योंकि असमिया भाषा में अत्यधिक शब्द संस्कृत के होने के कारण हिंदी सीखने व समझाने में कुछ सुविधा होती है। मणिपुर में भी कमोबेश यही स्थिति है। यहाँ भी हिंदी सम्पर्क भाषा के रूप में जगह बना ली है। मेघालय में विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी का विकास हुआ है परंतु सम्पर्क भाषा के रूप में यहाँ हिंदी आज तक विकसित नहीं हो पाई है। हालाँकि केंद्रीय हिंदी निदेशालय एवं अन्य हिंदी प्रचार संस्थाओं द्वारा कार्यशाला. संगोष्ठी का आयोजन किया जाता है अतः यह उम्मीद की जा सकती है कि आने वाले समय में मेघालय में हिंदी की स्थिति बेहतर होगी। मिजोरम में हिंदी का काफी प्रचार-प्रसार हुआ है। यहाँ भी हिंदी की स्थिति संतुलित है। इसके अतिरिक्त पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों नागालैण्ड, अरुणाचल, त्रिपुरा, सिक्किम में हिंदी का भविष्य विकासोन्मुख है। इस सम्बन्ध में वर्तमान सरकार भी काफी सक्रिय है। फरवरी 2020 में गुवाहाटी विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग की स्थापना के स्वर्ण जयंती वर्ष के अवसर पर 'हिंदी की स्थिति- चुनौतियाँ और संभावनाएँ' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस तरह से अनेक कार्यक्रम सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थानों के द्वारा समय-समय पर आयोजित किए जाते हैं। देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के हिंदी विभाग में भी पूर्वोत्तर को लेकर एक सक्रियता दिखाए पड़ने लगी है। देश के प्रमुख विश्वविद्यालयों में पूर्वोत्तर के विषयों पर शोध कार्य करवाए जाते हैं, जिसका लाभ आने वाली पीढ़ी को मिलेगा।

संदर्भ ग्रन्थ-

1. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, 2000

2. भारतीय साहित्य की भूमिका, डॉ. रामविलास शर्मा

3. महापुरुष शंकरदेव ब्रजबुलि ग्रन्थावली, सं. लक्ष्मीशंकर गुप्त

4. महाकवि शंकरदेवः विचारक एवं समाज सुधारक, डॉ. कृष्ण नारायण प्रसाद 'मागध', हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय

5. माधवदेव व्यक्तित्व और कृतित्त्व, कृष्ण नारायण 'मागध'

6. पूर्वांचल प्रदेश में हिंदी भाषा और साहित्य, डॉ. सी.इ. जीनी

7. पूर्वोत्तरीय राज्यों में हिंदी साहित्यलेखन का इतिहास, हरेराम पाठक, अनंग प्रकाशन, दिल्ली

8. पूर्वोत्तर भारतः अंतुल्य भारत, वीरेंद्र परमार, हिंदी बुक सेंटर नई दिल्ली-110002

9. उत्तर पूर्व भारत का इतिहास, राजेश वर्मा, मित्तल पब्लिकेशन, दरियागंज दिल्ली- 110002

10. पूर्वोत्तर भारत के सांस्कृतिक आयाम, वीरेंद्र परमार, मित्तल पब्लिकेशन, दरियागंज दिल्ली 110002

- अनंत मिश्र

शोधार्थी, हिंदी विभाग

दिल्ली विश्वविद्यालय-110007